तिलावत से ग़फ़लत

मुहम्मद अज़हर मदनी

उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

तुम में से सबसे बेहतर वह है जिसने पवित्र कुरआन को स्वयं भी सीखा और दूसरे को भी सिखाया। (सहीह बुख़ारी)

अल्लाह के रसूल पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम लोग कुरआन की तिलावत करते रहो क्योंकि यह क्यामत के दिन अपने पढ़ने वालों की सिफ़ारिश करेगा। (सहीह मुस्लिम)

पवित्र कुरआन की फ़ज़ीलत का कई सूरतों में उल्लेख किया गया है। सूरे क़द्र में अल्लाह तआला ने फ़रमायाः यकीन हमने इसे शबे क़द्र में नाज़िल किया तू क्या समझा शबे क़द्र क्या है? शबे क़द्र एक हज़ार महीनों से बेहतर है। इस में (हर काम) के सर अंजाम देने को अपने रब के हुक्म से फ़रिश्ते और रूह जिब्रईल उतरते हैं। यह रात सरासर सलामती की होती है यह फज्र के उदय होने तक होती है। (सूरे क़द्र)

पवित्र कुरआन की तिलावत और इसको पढ़ने व समझने के बहुत से फायदे हैं, कुरआन की एक आयत में कहा गया है कि इसकी आयतों की तिलावत करने से शिफा मिलती है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

''यह कुरआन जो हम नाज़िल कर रहे हैं मोमिनों के लिये तो सरासर शिफ़ा और रहमत है हाँ ज़ालिमों को नुक़सान के सिवा कोई ज़्यादती नहीं होती।'' (सूरे बनी इस्राईल ८२)

दूसरे खलीफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

''निसन्देह अल्लाह तआला कुरआन पाक के द्वारा कुछ लोगों को बुलन्द करता है और कुछ लोगों को गिरा देता है।''

ऊपर में बयान की गई हदीसों और पवित्र कुरआन की आयतों से कुरआन को पढ़ने पढ़ाने और इसकी तिलावत की फ़ज़ीलत व अहमियत का पता चलता है, लेकिन अफसोस है कि आज इसके मानने वाले इसकी तिलावत से गाफ़िल हैं, लोग घन्टों घन्टों सोशल मीडिया पर अपना वक़्त बर्बाद कर देते हैं लेकिन कुरआन की तिलावत और इसके अर्थों पर गोर व फिक्र से गाफ़िल रहते हैं जबकि अल्लाह तआला ने कुरआन में कई मकामात पर कुरआन को पढ़ने के फायदे और उसकी फज़ीलत का उल्लेख किया है। हदीसों में कुरआन सीखने वालों और दूसरों को सिखाने वालों को सबसे बेहतर इस लिये भी कहा गया है कि अगर कोई शख्स इसके सिखाने के बाद इसकी तालीमात पर अमल करता है तो यह उसके लिये इन्शाअल्लाह सदक़ए जारिया साबित होगा।

मासिक
इसलाहे समाज
अप्रैल 2025 वर्ष 36 अंक 4
शव्वालुल मुकर्रम 1446 हिजरी

संरक्षक
असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक
मुहम्मद ताहिर

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये

सम्पर्क
मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद ताहिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. तिलावत से ग़फ़लत 02
2. मिल्लत की स्थिति और हम 04
3. पवित्र कुरआन का प्रभाव 06
4. अहले सुन्नत वल जमाअत का अक़ीदा 07
5. अल्लाह ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करता 12
6. क़त्ल महा पाप है 13
7. प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्यारी बातें 15
8. 15 वाँ आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स 17
9. सुखमय व्यवहारिक जीवन के साधन 18
10. इस्लाम आतंकवाद का घोर विरोधी 20
11. चार चीज़ों पर अमल ज़रूरी 24
12. बच्चों का प्रशिक्षण 25
13. कोई भी पकड़ से बच नहीं पायेगा 26
14. अपील 27
15. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- www.ahlehadees.org

सम्पादकीय

मिल्लत की स्थिति और हम

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

देश, समुदाय और मानवता को जो हालात दरपेश हैं जिस तरह पूरी दुनिया धीरे-धीरे कठिनाइयों की गढ़ बनती जा रही है और जिस तरह विभिन्न अध्यात्मिक और शारीरिक बीमारियाँ नासूर और कैंसर बन कर उम्मत और मानवता के पार्थिव शरीर एवं चरित्र को लुक्म-ए-तर बना डालने के दर पे हैं, इन हालात में मुस्लिम कौम और मुस्लिम उम्मत पर बेहतरीन उम्मत होने की हैसियत से सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदाराना भूमिका निभाना फ़र्ज़ है और इस पर उचित रूप से देश समुदाय और मानवता का फ़र्ज़ है कि वह सबके लिये उठ खड़ी हो, वह पूरी मानवता की कामयाबी और भलाई के लिये अपनी वांक्षित भूमिका अदा करे और तबाही के दहाने पर खड़ी विश्व समुदाय की दस्तगीरी करे जिन्होंने केवल इस संसार को देखा है और जिनका यक़ीन है कि माल ही सब कुछ इन्सानी जीवन का उददेश्य है इसलिये इसकी प्राप्ति के जो भी तरीक़े संभव हों मिसाल के तौर पर चोरी, डकैती, लूट और ख़्यानत वग़ैरह इन सबको अपना कर दुनिया कमाई जा सकती है और माल व पद की प्राप्ति और स्थान पाने के लिये सूद, जुवा, धोके पर आधिरत व्यवपार, अत्याचार, दगाबाज़ी, जालसाज़ी के जितने भी तरीक़े हैं, शोषण के जितने भी संसाधान हों और साम्यवाद के जितने भी फारमूले और तरीक़े हो सकते हैं वह सब हलाल और वैध हैं। जबरदस्ती, हिंसा और ताक़त का इस्तेमाल अपने फ़ायदे के लिये हर तरह वैध है और हर बड़ी मछली छोटी मछली का शिकार करे कि यह पानी की दुनिया का सिद्धांत है और जिस तरह जंगल का क़ानून है कि अराजकता का बोल बाला हो और ताक़त के नशे और शक्ति का इस्तेमाल कमजोरों पर होता रहे इसी तरह बल्कि इससे भी कहीं ज़्यादा अत्याचार और शोषण आज की अपरिणाम दर्शी तथाकथित सभ्य दुनिया अपने ही जैसे इनसानों के खिलाफ़ नृशंस अंदाज़ में अंजाम दे रही है इसलिये इसकी बर्बादियों के आम चर्चे हैं जमाने में।

इन तमाम परिस्थितियों में पहली और आखिरी आशा की किरण सिर्फ़ और सिर्फ़ मुसलमान हो सकते थे लेकिन उनका हाल यह है कि उनकी जिल्लत व अपमान, आपसी वैमनष्यता, और हसद व जलन इन्तेहा को पहुंच चुकी है। समुदायों और गुटों की लड़ाइयों को छोड़ो एक समुदाय से संलग्न लोग और शख्सियात छल कपट दुश्मनी नफरत और पक्षपात के इस तरह शिकार हैं कि किसी मुसलमान को किसी यहूदी से क्या रही होगी और क्या किसी यहूदी को किसी नसरानी के साथ ऐसा करना गवारा होगा।

आह! आज के मुसलमान के लिये यह सब कुछ ज़्यादा आसान हो गया है हालांकि वह पूरी दुनिया के ईमान की हिफ़ाज़त, जान की हिफ़ाज़त, इज्ज़त की सुरक्षा और आख़िरत में उनकी कामयाबी की ज़मानत के लिये पैदा किये गये थे। आह! आज मुस्लिम कौम दुनियावी, वक़्ती और

अस्थिर लाभ के लिये पूरी उम्मत और मिल्लत का सौदा करने से दरेग़ नहीं कर रही है। अल्लाह और रसूल स० ने जिस क़ौम को ''तुम ही सरबुलन्द रहो गे शर्त यह है कि मोमिन बन कर रहो'' की शुभसूचना सुनाई और कर्तव्य सिखाया था और अल्लाह तआला और पैगम्बर मुहम्मद स० की उज्जवल शिक्षाओं ''तुम लोग मेरे बाद हर्गिज़ गुमराह नहीं होगे, अरब व अजम के मालिक होगे, तुम बेहतरीन उम्मत हो लोगों के लिये पैदा की गई है'' के अनुसार जिस उम्मत को पूरी दुनिया की भलाई या मार्गदर्शन के लिये पैदा किया गया था वह कौम व मिल्लत अल्लाह, रसूल और बन्दों के अधिकारों को भूल कर सिर्फ और सिर्फ कभी किसी पार्टी पर भरोसा करके, कभी किसी आवाज़ पर दीवानावार दौड़ते हुए, कभी लालच के प्रभाव से कभी भय से और कभी आशा और लालच के सहारे जीना जानती है। इसलिये यह जान लीजिये कि ऐसी उम्मत बहुत दिनों तक ज़िन्दा बाक़ी नहीं रह सकती। जब तक उसका विश्वास अल्लाह के अलावा और दुनिया वालों पर रहेगा उसको बर्बादी व हिलाकत से कोई बचा नहीं सकता।

बाक़ी पृष्ठ ११ का

तथा इसके बिना कोई चारा नहीं।

क्योंकि जिन चीज़ों को अपने अस्तित्व के लिए स्वयं अल्लाह तआला ने प्रमाण दिया या उनको अस्वीकृत किया है वह एक सूचना है जो उसने अपने अस्तित्व के संबन्ध में सूचना दी है तथा अपने अस्तित्व को वही सबसे अच्छा जानता है।

तथा अल्लाह तआला की जिन विशेषताओं की स्वीकृति अथवा अस्वीकृति का प्रमाण प्यारे नबी स० से मिलता है वह आप की ओर से अल्लाह तआला की विशेषताओं के संबन्ध में सूचनायें हैं। तथा लोगों में सबसे बढ़कर प्यारे नबी स० को ही अल्लाह तआला के संबन्ध में ज्ञान था तथा आप स० सम्पूर्ण जगत में सबसे अधिक शुभचिंतक, सत्यनिष्ठा तथा सत्यवादी थे।

इसलिए यह निष्कर्ष निकला कि जब अल्लाह तआला तथा उसके रसूल स० का कथन ज्ञान, सत्यता सबसे बढ़कर है तो फिर उसे स्वीकार करने में असमंजस क्यों हो जबकि उसे रद्द करने के लिए न कोई दलील है और न ही कोई कारण।

❑❑❑

बाक़ी पृष्ठ २३ का

लाभ मिलता है और उनके लिए ही दुखदायी यातना है''।

नबी करीम सल्ल० ने फरमाया हैः ''जो व्यक्ति गुमराही की दावत देता है उस पर अपने गुनाह और उसका अनुसरण करने वालों के गुनाह लग जाते हैं। दूसरों के गुनाहों से कुछ कम नहीं किया जाता''। (मुस्लिम)

५. ओलमा ने कहा कि दीन इस्लाम एकता का आवाहक है और फूट व बिखराव का विरोधी है जबकि आतंकवादी फूट व बिखराव का कारण बनते हैं। उन्होंने मांग की कि रियासत के शासकों को चाहिए कि वह इस प्रकार के फ़तवे और विचार जारी करने वालों को अदालत के हवाले करें और उनकी उपद्रवी गतिविधियों से लोगों को बचाएँ। बयान पर देश के प्रमुख मुफती शैख अब्दुल अजीज़ आल अश्शैख ने बोर्ड के मुखिया और अन्य ओलमा ने सदस्य की हैसियत से हस्ताक्षर कर रखे हैं।

(देखिएः बयानुल हैयती, फतावा अल अइम्मा फिल नवाज़िल अल मुद् लहिम्मा, लेखकः शैख मुहम्मद बिन हुसैन अल कहतानी पृ० ३१-३३)

पवित्र कुरआन का प्रभाव

मौलाना शमसुल हक़ सलफ़ी

पवित्र कुरआन मानव जीवन के हर हर पहलू पर गहरा असर डालता है जब पवित्र कुरआन की तिलावत गौर व फिक्र से किया जाये तो इससे तिलावत करने वालों पर और इसी तरह से सुनने वालों पर भी बड़ा प्रभाव पड़ता है। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''अल्लाह ने बेहतरीन कलाम (वाणी) नाज़िल किया है जो ऐसी किताब है कि आपस में मिलती जुलती और बार बार दोहराई हुई आयतों की है जिससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब का भय रखते हैं। आख़िर में उनके शरीर और दिल अल्लाह तआला की याद की तरफ नर्म हो जाते हैं। यह है अल्लाह की हिदायत जिसे चाहे यह दिखा देता है और जिसे अल्लाह तआला ही राह भुला दे उसको कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं। (सूरे जुमरः२३)

पवित्र कुरआन की आयतों को सुन कर बाज़ हक पसन्द गैर मुस्लिमों की आखों से आंसू बह जाते हैं। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

और जब वह रसूल की तरफ से अवतरित वाणी को सुनते हैं तो आप उनकी आखें आंसू से बहते हुए देखते हैं इस सबब से कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया है वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब हम ईमान ले आये हैं पस तू हम को भी उन लोगों के साथ लिख ले जो पुष्टि करते हैं। (सूरे माइदाः८३)

इन आयतों में पवित्र कुरआन सुनकर उन पर जो प्रभाव हुआ उसका नकशा खींचा गया है और उनके ईमान लाने का उल्लेख है। पवित्र कुरआन में बाज जगहों पर इसी तरह उल्लेख किया गया है। मिसाल के तौर पर

''यकीनन अहले किताब में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो अल्लाह पर और उसकी किताब पर और जो तुम पर नाज़िल हुई और उस पर जो उन पर नाज़िल हुई ईमान रखते हैं, और अल्लाह के आगे विनम्रता (आजिज़ी) करते हैं।'' (सूरे आले इमरान)

अगर पवित्र कुरआन को पहाड़ जैसी सृष्टि पर अवतरित किया जाता तो वह भी भय से टुकड़े टुकड़े हो जाता। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

अगर हम यह कुरआन किसी पहाड़ पर अवतरित करते तो तुम देखते वह अल्लाह के भय से पस्त हो कर टुकड़े-टुकड़े हो जाता। (सूरे हश्र-२१)

यह इन्सान को समझाया और डराया जा रहा है कि तुझे अक़्ल और समझ की योग्यता दी गई है अगर कुरआन सुन कर तेरे दिल पर असर नहीं करता तो तेरा अंजाम अच्छा नहीं होगा।

कुरआन की आयतों को सुन कर ईमान वालों के दिल कांप उठते हैंः पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

विनम्रता करने वालों को खुश्खबरी सुना दीजिए कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं।(सूरे हजः३५)

अहले सुन्नत वल जमाअत का अक़ीदा

शैख़ मुहम्मद सालेह उसैमीन रह०

अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों, आख़िरत के दिन और तक़दीर की बुराई-भलाई पर ईमान लाना।

अल्लाह तआला पर पूर्ण ईमानः

इसलिए हम अल्लाह तआला की रूबूबीयत (ईश्वरत्व) पर ईमान लाते हैं अर्थात केवल वही पालने वाला, पैदा करने वाला, हर चीज़ का स्वामी तथा सभी कार्यों का उपाय करने वाला है।

और हम अल्लाह तआला की उलूहियत (पूज्य होने) पर ईमान लाते हैं अर्थात वही एक सच्चा पूज्य है। उसके अतिरिक्त कोई भी पूज्य नहीं है तथा अल्लाह तआला के नामों और उसकी विशेषताओं पर भी हमारा ईमान है। अर्थात अच्छे से अच्छा नाम सब उसी के लिए हैं, तथा उन नामों की विशेषताओं में उसके एकत्व पर भी हमारा ईमान है अर्थात उसकी रूबूबीयत एवं उलूहियत तथा नामों एवं विशेषताओं में उसके साथ कोई साझीदार नहीं।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैंः

वह धरती एवं आकाशों का तथा जो कुछ उन दोनों के बीच है सबका पालक एवं पोषक है इसलिए उसी की उपासना करो तथा उसी की उपासना पर दृढ़ रहो। क्या तुम कोई उसका समनाम जानते हो? (सूरह मरयम-६५)

हमारा ईमान है किः

''अल्लाह तआला ही सत्य पूजित है उसके अतिरिक्त कोई उपासना (इबादत) के योग्य नहीं, जीवित, सदैव स्थिर रहने वाला, उसे न ऊंध आती है और न ही नींद, जो कुछ आकशों में तथा जो कुछ धरती में है सब उसी का है। कौन है जो उसकी आज्ञा के बिना उसके सामने किसी की सिफ़ारिश कर सके। जो कुछ लोगों के सामने हो रहा है तथा जो कुछ उनके पीछे हो चुका है वह सब जानता है। और वह उसके ज्ञान में से किसी चीज़ पर सामर्थ्य प्राप्त नहीं कर सकते, हां जितना वह चाहता है उतना उसे ज्ञात करा देता है। उसकी कुर्सी ने ध ारती एवं आकाशों को घेरे में ले रखा है। तथा इसके लिए उनकी रक्षा कठिन नहीं। तथा वह बड़ा उच्च एवं महान है। (सूरह बक़राः२५५)

वही अल्लाह तआला है जिसके अतिरिक्त कोई सत्य पूजित (माबूद) नहीं। परोक्ष तथा प्रत्यक्ष का जानने वाला है। वह बहुत ही बड़ा दयावान एवं अति कृपालु है। वही अल्लाह तआला है जिसके अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं, वास्तविक शासक, एवं हर दोष से पवित्र, सुरक्षित, शान्ति एवं सुरक्षा देने वाला, संरक्षक, बलिष्ठ, प्रभावशाली, श्रेष्ठता वाला, लोग जो साझीदार बनाते हैं अल्लाह तआला उससे पाक एवं पवित्र है। वही अल्लाह तआला सम्पूर्ण संसार का अविष्कारक है, रूप देने वाला है, सब अच्छे-अच्छे नाम उसी के हैं। धरती एवं आकाश में जितनी चीज़ें हैं सब उसकी तस्बीह करतीं हैं। (सूरह हश्र २२,२३,२४)

और हमारा ईमान है किः

धरती एवं आकाशों की बादशाही केवल उसी के लिए है। वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है बेटा देता है, या उनको बेटे और बेटियाँ दोनों से कृपा करता है और जिसे चाहता है निःसंतान रखता है, निःसंदेह वह जानने वाला तथा शक्ति वाला है। (सूरह शूरा-४६,५०)

और हमारा इस पर भी ईमान है किः

''उस जैसी कोई चीज़ नहीं और वह खूब देखने वाला सुनने वाला है, धरती एवं आकाश की कुंजियाँ उसी के पास है। वह जिसके लिए चाहता विस्तृत जीविका प्रदान करता है तथा जिसके लिए चाहता है थोड़ा कर देता है। निःसंदेह वह हर चीज़ से परिचित है।'' (सूरह शूरा-११,१२)

और हमारा ईमान इस पर भी है किः

धरती पर कोई चलने-फिरने वाला नहीं, किन्तु उसकी जीविका अल्लाह तआला के जिम्मा है तथा वह जहाँ रहता है उसे भी जानता है तथा जहां अर्पित किया जाता है उसे भी, यह सब कुछ स्पष्ट रूप से किताब (लौहे महफूज़) में उल्लेख है। (सूरह हूद-६)

और हमारा इस पर भी ईमान है किः

''तथा उसके पास परोक्ष की कुंजियाँ हैं, जिनको उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता तथा उसे थल एवं जल की तमाम चीज़ों का ज्ञान है तथा कोई पत्ता भी झड़ता है तो वह उसको जानता है तथा धरती के अंधेरों में कोई अन्न तथा कोई हरी या सूखी चीज़ ऐसी नहीं जिसको वह नहीं जानता। परन्तु इसका उल्लेख स्पष्ट रूप से किताब (लौहे महफूज़) में है।'' (सूरह अनआम-५१)

और हमारा ईमान है किः

''निःसंदेह अल्लाह तआला ही के पास क़ियामत (महाप्रलय) का ज्ञान है। तथा वही (निराश के बाद) वर्षा देता है, तथा जो कुछ (गर्भवती के) गर्भाशय में है उसकी (वास्तविकता को) वही जानता है तथा कोई व्यक्ति नहीं जानता कि कल वह क्या काम करेगा, तथा कोई जीवधारी नहीं जानता कि धरती के किस क्षेत्र में उसे मृत्यु होगी, निःसन्देह अल्लाह ही पूर्ण ज्ञान वाला तथा सत्य जानने वाला है।'' (सूरह लुक़मान-३४)

और हमारा इस पर भी ईमान है किः

''अल्लाह तआला जो चाहे जब चाहे तथा जैसे चाहे कलाम (बात) करते हैं।

और अल्लाह तआला ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से बता की।'' सूरह निसा-१६४)

''और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) हमारे निश्चित किये हुए समय में (तूर पहाड़ पर) आये तो उनके पालक ने उनसे बातें की''। (सूरह आराफ़-१४३)

''और हमने उनको तूर (पहाड़ का नाम) की दायीं ओर से पुकारा तथा कान में बात कहने के लिए निकट बुलाया।'' (सूरह मरयम-५२)

और हमारा इस पर भी ईमान है किः

''यदि समुद्र मेरे प्रभु की बातों को लिखने के लिये स्याही हो तो पूर्व इसके कि मेरे प्रभु की बातें समाप्त हों समुद्र समाप्त हो जाये।'' (सूरह कहफ-१०१)

''यदि ऐसा हो कि धरती पर जितने वृक्ष हैं सब क़लम हों तथा समुद्र के सभी जल स्याही हों, उसके बाद कि सात समुद्र और स्याही हो जायें तो अल्लाह की बातें समाप्त नहीं हो सकतीं। निःसन्देह अल्लाह प्रभावशाली एवं हिक्मत वाला है।'' (सूरह लुक़मान-२७)

और हमारा ईमान है किः

अल्लाह तआला की बातें सूचनाओं में सत्यता, आदेशें में न्याय तथा बातों में सुन्दरता, के आधार पर सभी बातों से उत्तम हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैंः

तथा तुम्हारे प्रभु की बातें सत्य एवं न्याय से परिपूर्ण हैं। (सूरह अनआम-११५)

तथा अल्लाह से बढ़कर सत्य बात कहने वाला कौन है? (सूरह

निसा-८७)

तथा हम इस पर भी ईमान रखते हैं कि कुरआन करीम अल्लाह का शुभ कथन है। निश्चय ही उसने वह बात की है तथा जिब्रील अलैहिस्सलाम पर इलक़ा (वह बात जो अल्लाह किसी के दिल में डालता है) किया। फिर जिब्रील अलैहिस्सलाम ने उसे प्यारे नबी स० के दिल में उतारा।

अल्लाह तआला फरमाते हैंः कह दीजिए उसको ''रूहुल कुदुस'' जिब्रील की उपाधि) तुम्हारे प्रभु की ओर से सत्यता के साथ लेकर आये हैं''। (सूरह नहल-१०२)

और यह पवित्र कुरआन अल्लाह तआला की ओर से अवतरित किया हुआ है जिसको लेकर रूहुल अमीन हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आये उसने तुम्हारे दिल में डाला ताकि तुम लोगों को डराने वालों में से हो जाओ वह भी साधारण अरबी भाषा में। (सूरह शोरा १९१-१९५)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला अपनी ज़ात एवं विशेषताओं में मानव से सर्वोच्च है। वह स्वयं फ़रमाते हैं।

वह बहुत उच्च एवं बहुत महान है। (सूरह बकरः२५५)

और हमारा ईमान है किः

तुम्हारा पालक अल्लाह है जिसने धरती एवं आकाशों को छः दिन में बनाया फिर सिंहासन पर उच्चय हुआ, वही प्रत्येक कार्य की व्यवस्था करता है। (सूरह यूनुस-३)

तथा अल्लाह तआला का सिंहासन पर उच्चय होने का अर्थ यह है कि वह स्वयं उस पर बुलन्द हुआ जिस प्रकार की बुलन्दी उसकी महानता के योग्य है। उसके अतिरिक्त किसी को भी उसकी स्थिति का विवरण मालूम नहीं है।

और हम इस पर भी ईमान रखते हैं कि अल्लाह तआला अर्श पर रहते हुए भी अपने सृष्टि के साथ होता है, उनकी दशाओं को जानता है, बातों को सुनता है, कार्यो को देखता है तथा जन-साधारण के सभी कार्यों का उपाय करता है, भिक्षुक को जीविका प्रदान करता है तथा निर्बल को शक्ति एवं बल देता है जिसे चाहे शासक के पद से सम्मानित करता है तथा जिसे चाहे राज-पाट छीन लेता है, जिससे चाहे प्रतिष्ठा एवं सम्मान देता है तथा जिसे चाहे अपमानित एवं निंदित कर देता है, हर प्रकार की भलाई एवं कल्याण उसके हाथ में है तथा हरेक चीज़ पर उसका सामर्थ्य है। तथा जिसका अस्तित्व इतना प्रतिष्ठत एवं शक्तिशाली हो वह वास्तव में अपने सृष्टि से ऊपर अपने सिंहासन पर ही उच्चय हो सकता है किन्तु इसके बावजूद भी वह अपने सृष्टि से दूर नहीं बल्कि साथ-साथ होता है।

अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

उस जैसा कोई नहीं और वह खूब देखने वाला एवं सुनने वाला है। (सूरह शूरा-९९)

और हमारा इस पर भी ईमान है जो प्यारे नबी स० ने अल्लाह तआला के संबन्ध में सूचित किया है कि हर रात जब एक तिहाई रात शेष रह जाती है तो वह सांसारिक आकाश पर आते हैं और कहते हैंः

''कौन मुझे पुकारता है कि मैं उसकी दुआ स्वीकार करूं, कौन मुझ से मांगता है कि मैं उसे दूं, कौन मुझसे माफ़ी चाहता है कि मैं उसके गुनाहों को माफ़ कर दूं। (हदीस)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला क़ियामत (महाप्रलय) के दिन बन्दों के बीच न्याय करने के लिये आयेंगे।

अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

तो जब धरती कूट-कूट कर समतल कर दी जायेगी तथा तुम्हारा रब (प्रभु) आयेगा और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध होकर आयेंगे तथा उस

दिन नरक (दोज़ख) को लाया जायेगा (सूरह फ़ज्र-२१-२३)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआलाः

वह जो चाहे कर देता है। (सूरह बुरूज-१६)

और हमारा ईमान है किः

अल्लाह तआला अपने औलिया से प्रेम करते हैं तथा वह अल्लाह तआला से प्रेम रखते हैं। अल्लाह तआला फरमाते हैंः

ऐ मुहम्मद स० कह दीजिए कि यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो अल्लाह भी तुम्हें मित्र बनायेगा। (सूरह आले इमरान-३१)

और फरमाते हैंः

तो अल्लाह तआला ऐसे लोगों को पैदा कर देगा जिन से वह प्रेम करेंगे तथा वह उसे प्रेम रखेंगे। (सूरह मायदा-५४)

तथा अल्लाह धैर्य रखने वालों से प्रेम करता है। (सूरह आले इमरान-१४६)

और फ़रमाते हैंः

तथा न्याय से काम लो निःसंदेह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है। (सूरह हुजरात-१)

और फ़रमाते हैंः

तथा उपकार करो निःसंदेह अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है। (सूरह बकरः११५)

और हमारा ईमान है किः

अल्लाह तआला ने जिन कर्मों एवं कथनों को धर्मानुकूल कहा है वह उसे प्रिय है तथा जिनसे रोका है वह उसे अप्रिय हैं।

और हमारा ईमान है किः

अल्लाह तआला उन लोगों से प्रसन्न होता है जो ईमान लाते हैं तथा सत्य कर्म करते हैं। फ़रमाते हैंः

अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ तथा वह (सहमति का प्रदान) अल्लाह से प्रसन्न हुए। यह उसके लिए है जो अपने प्रभु से डरता रहा। (सूरह बय्यिना-८)

परन्तु वह जो दिल खोल कर कुफ्र करें तो ऐसों पर अल्लाह का क्रोध है तथा उनके लिए बहुत बड़ी यातना है। (सूरह नहल-१०६)

और हम इस पर भी ईमान रखते हैं किः

तथा तेरे प्रभु का मुख जो महान एवं सम्मानित है शेष रहेगा। (सूरह रहमान-२७)

और हमारा ईमान है किः

अल्लाह तआला के महान एवं कृपा वाले दो हाथ हैं। फ़रमाते हैंः

बल्कि उसके दोनों हाथ खुले हुए हैं वह जिस प्रकार चाहता है खर्च करता है। (सूरह मायदा-६४)

तथा उन्होंने अल्लाह का सम्मान जिस प्रकार करना चाहिए था नहीं किया, क़ियामत (महाप्रलय) के दिन संपूर्ण धरती उसकी मुटठी में होगी तथा आकश उसके दायें हाथ में लपेटे होंगे और वह उन लोगों के शिर्क से पवित्र एवं सर्वोपरि है। (सूरह जुमर-६७)

और हमारा ईमान है किः

अल्लाह तआला की दो वास्तविक आँखें हैं जिसका तर्क पवित्र कुरआन की आयत एवं नबी स० की हदीस से मिलता है। फ़रमाते हैंः

तथा एक नाव हमारे आदेश से हमारी आंखों के सामने बनाओ। (सूरह हूद-३७)

और नबी स० ने फ़रमायाः

अल्लाह तआला का परदा नूर (ज्योति) है यदि उसे उठा दे तो उसके मुख की ज्योतियों से उसके सृष्टि जल कर राख हो जायें। (मुस्लिम-२१३)

तथा सुन्नत के अनुसरण करने वाले इस पर सहमत हैं कि अल्लाह तआला की आंखें दो हैं तथा इसकी पुष्टि निम्नलिखित हदीस से होती हैं।

आप स० ने दज्जाल के संबन्ध ा में फ़रमायाः

दज्जाल काना है तथा तुम्हारा प्रभु इस दोष एवं ऐब से पवित्र है। (हदीस)

और हमारा ईमान है किः

वह ऐसा है कि आंखें उसे देख नहीं सकतीं तथा वह सभी निगाहों को देखता है तथा वह सुक्ष्मदर्शी एवं सर्वसूचित है। (सूरह अंआम-१०३)

और हमारा इस पर भी ईमान है किः

मोमिन (ईमान वाला) क़ियामत के दिन अपने प्रभु के दर्शन से आनंदित होंगे। फ़रमाते हैंः

इस दिन बहुत से मुख प्रफुल्लित होंगे, अपने प्रभु की ओर देख रहे होंगे। (सूरह क़ियामह-२२,२३)

और हमारा इस पर भी ईमान है कि सभी विशेषतायें अल्लाह तआला में उत्तम हैं तथा उसके समान कोई नहीं है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैंः

उस जैसी कोई चीज़ नहीं वह अधिक सुनने वाला तथा देखने वाला है। (सूरह शूरा-११)

उसे ऊंघ एवं नीद नहीं आती। (सूरह बक़रः २५५)

क्योंकि उसमें जीवन एवं स्थिरता की विशेषतायें उत्तम एवं अत्याधिक पाई जाती हैं।

और हमारा ईमान है कि वह अपने पूर्ण न्याय एवं इंसाफ की विशेषताओं के कारण किसी पर अत्याचार नहीं करता।

तथा अपने ज्ञान एवं योग्यता के कारण वह अपने बंदों के व्यवहार से कभी अनभिज्ञ नहीं होता।

और हमारा ईमान है कि उसके पूर्ण ज्ञान एवं शक्तियों के कारण आकाश एवं धरती की कोई चीज़ उसे लाचार नहीं कर सकती। अल्लाह तआला फरमाते हैंः

उसकी शान यह है कि वह जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसे फ़रमा देता है कि हो जा, तो वह हो जाती है। (सूरह यासनी-८२)

तथा अपनी शक्ति की पूर्णता के कारण उसे कभी लाचारी एवं थकावट का सामना नहीं करना पड़ता। फ़रमाते हैंः

हमने धरती एवं आकाशों को तथा उसके अन्दर जो कुछ है सबको छः दिन में पैदा कर दिया और हमें ज़रा भी थकावट नहीं हुई। (सूरह काफ़-३८)

और हमारा ईमान अल्लाह तआला के उन नामों एवं विशेषताओं पर है जिसका प्रमाण स्वयं अल्लाह तआला की बातों से अथवा उसके रसूल स० की बातों से मिलता है किन्तु हम दो बड़ी त्रुटियों से अपने आप को बचाते हैं।

१. समानताः

अर्थात दिल या जुबान से यह कहना कि अल्लाह तआला की विशेषतायें मनुष्य की विशेषताओं के समान है।

२. अवस्थाः

दिल या जुबान से यह कहना कि अल्लाह तआला की विशेषतायें इस प्रकार हैं।

हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला उन सभी विशेषताओं से पवित्र है जिनका अपने आस्तित्व के संबंन्ध में उसने स्वयं या उसके रसूल ने अस्वीकृति दी है।

यह ध्यान रहे कि उस अस्वीकृति में संकेत के तौर पर उसके विपरीत पूर्ण विशेषताओं का प्रमाण भी है तथा जिन विशेषताओं से सम्बन्धित अल्लाह तआला और उसके रसूल स० ने मौन अपनाया है हम भी उनके सम्बन्ध में मौन अपनाते हैं और हम समझते हैं कि इस मार्ग पर चलना अनिवार्य है

शेष पृष्ठ ५ पर

अल्लाह ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करता

मौलाना अबू मुआविया शारिब

क़्यामत की निशानी में से एक निशानी यह भी है कि जैसे जैसे क़्यामत क़रीब आती जाएगी ज्ञान फैलता जायेगा लेकिन लोग बेअमल होते जायेंगे। (बुख़ारी)

आज हम अपनी आखों से देख रहे हैं कि लोगों के पास ज्ञान तो है मगर अमल नाम की कोई चीज़ नहीं है, आज हर कोई दूसरों को अमल करने का उपदेश और आदेश देता नज़र आ रहा है मगर स्वयं अमल की दुनिया से कोसों दूर है। देखा जा रहा है कि लोग सुबह उठते ही वाटसेप पर नमाज़ और अन्य इबादतों से संबिन्धित पोस्ट खूब शियर करते हैं, हर कोई दूसरों को दीन बताना चाहता है और दूसरों को दीन के अहकाम पर अमल करने की तलक़ीन करता है मगर अपने पोस्ट किये गये मेटर के अनुसार स्वयं अमल नहीं करता। आज हर कोई ऐसा सोचता और समझता है। कुरआन में ऐसे ही लोगों के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है क्या तुम लोगों को भलाई का हुक्म करते हो और स्वयं का भूल जाते हो जबकि तुम किताब पढ़ते हो क्या तुम में इतनी भी समझ नहीं। (सूरे बक़रा-४४)

आज हम अपनी आखों से देख रहे हैं कि लोगों के पास ज्ञान तो है मगर अमल नाम की कोई चीज़ नहीं है, आज हर कोई दूसरों को अमल करने का उपदेश और आदेश देता नज़र आ रहा है मगर स्वयं अमल की दुनिया से कोसों दूर है।

अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों को मूर्ख ही क़रार नहीं दिया है बल्कि ऐसे लोगों से अपनी नराज़गी का इज़हार किया है कि जो दूसरों को तो दीन बताते हैं मगर स्वयं अमल नहीं करते तो मैं ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करता। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ऐ ईमान वालो! तुम वह बात क्यों करते हो जो करते नहीं तुम जो करते नहीं इसका कहना अल्लाह को सख़्त नापसन्द है। (सूरे सफ़२-३)

अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी ऐसे लोगों को बुरे अंजाम की खबर दी है जो दूसरों को अमल करने की नसीहत तो करते हैं मगर वह खुद अमल नहीं करते जैसा कि अनस बिन मालिक रजियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब मुझे मेराज कराई गई तो उस रात मेरा गुज़र कुछ ऐसे लोगों के पास से हुआ जिनके होंटों को आग की कैचियों से काटा जा रहा था तो मैंने जिब्रईल अमीन से पूछा कि यह कौन लोग हैंः उन्होंने कहा कि यह उम्मत के वह ख़तीब हैं जो दुनिया में लोगों को नेकी का हुक्म देते थे मगर वह खुद अमल नहीं करते थे हालांकि वह कुरआन की तिलावत भी करते हैं तो क्या उन्हें इतनी भी समझ नहीं है। (मुस्नद अहमद १३५१५)

❑❑❑

कत्ल महा पाप है

अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद अज्जहबी रहि०

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है "वह शख्स जो किसी मोमिन को जान बूझ कर कत्ल कर दे तो उसकी सज़ा जहन्नम है जिसमें वह रहेगा उस (कातिल) पर अल्लाह का गजब और उसकी लानत है और अल्लाह ने उसके लिये सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है" (सूरे निसा)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है

"वह लोग जो कि अल्लहा के साथ किसी दूसरे मअबूद (अपास्य) को नहीं पुकारते और जिस जान के मारने से अल्लाह ने मना किया है उसको नाहक नहीं मारते और न जिना (व्यभिचार) करते हैं और जो कोई यह काम करेगा वह अपने गुनाह (पाप) की सज़ा भुगते गा, क्यामत (प्रलय) के दिन उसको दो गुना अज़ाब हो गा और वह इसमें हमेशा के लिये जलील व खुवार (अपमानित) होगा मगर जिन लोगों ने तौबा की होगी और वह ईमान लाये होंगे और नेक आमाल (सत्कर्म) किये होंगे" (सूरे फुरकान-६८)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

"इसी वजह से बनी इस्राईल पर हमने यह फरमान लिख दिया था कि जिसने किसी इन्सान को खून के बदले या जमीन में फसाद फैलाने के सिवा किसी और वजह से कत्ल किया उसने गोया तमाम इन्सानों को कत्ल किया और जिसने किसी की जान बचाई उसने गोया तमाम इन्सानों को जिन्दगी बख्श दी"। (सूरे माइदा-३२)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

"और जब जिन्दा गाड़ी हुयी लड़की के हक़ में सवाल होगा कि वह किस जुर्म में मारी गयी थीं"। (सूरे तकवीर-८)

सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया:

सात हलाक कर दे वाले गुनाहों से बचो जिसमें फरमाया किसी का हराम और नाहक तौर पर कत्ल करना हेलाकत का सबब है। (बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नेसाई)

अर्थात जिसने किसी को नाहक कत्ल कर दिया उसने अपने आप को हलाक कर दिया।

एक आदमी ने अल्लाह के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से पूछा कि अल्लाह के नज़दीक सबसे बड़ा गुनाह क्या है? फरमाया कि तुम अल्लाह का शरीक (साझीदार) ठहराओ जबकि वह तुम्हारा खालिक (सृष्टा) है। फिर पूछा इसके बाद कौन सा? फरमाया कि तुम अपने बच्चे को इस डर से कत्ल कर दो कि बड़ा होकर तुम्हारा खाना खायेगा फिर पूछा इसके बाद? फरमाया कि अपने पड़ोसी की बीवी के साथ जिना करना। (बुखारी)

बुखारी मुस्लिम ने बिना आयत के बयान किया है। मुनजिरी ने तरगीब तरहीब में कहा कि तिर्मिज़ी और नेसाई ने आयत के साथ रिवायत किया है। सबने हज़रत अबू मसऊद अंसारी से रिवायत किया है।

अल्लाह तआला ने इसकी पुष्टि में यह आयत अवतरित की

"और वह लोग अल्लाह के साथ किसी दूसरे को मअबूद नहीं पुकारते और जिस जान के मारने से अल्लाह ने मना किया है उसे नाहक नहीं मारते और न ज़िना करते है"। (सूरे फुरकान-६८)

हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः कि जब दो मुसलमान तलवार लेकर आपस में लड़ें तो कातिल और मकतूल दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) यह तो कातिल है लेकिन मकतूल (जिसका कत्ल किया गया) को यह सज़ा क्यों होगी फरमाया इस लिये कि वह मददे मुकाबिल को कत्ल करना चाहता था। (मुसनद अहमद, बुखारी, मुस्लिम)

संन्देष्टा (पैगम्बर) मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया लोगों में कयामत के दिन सबसे पहले खून का फैसल किया जाये गा (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, नेसाई, इबने माजा)

अल्लाह के सन्देष्टा मुहम्मद स० अ०व० ने फरमाया जब किसी इन्सान का नाहक कत्ल होता है तो उसके खून का एक भाग आदम के पहले बेटे के नाम लिखा जाता है इस लिये कि कत्ल का तरीका उसी ने निकाला है। (बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिसने किसी गैर मुस्लिम को जो इस्लामी शासन में संधि के

हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः कि जब दो मुसलमान तलवार लेकर आपस में लड़ें तो कातिल और मकतूल दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) यह तो कातिल है लेकिन मकतूल (जिसका कत्ल किया गया) को यह सज़ा क्यों होगी फरमाया इस लिये कि वह मददे मुकाबिल को कत्ल करना चाहता था। (मुसनद अहमद, बुखारी, मुस्लिम)

साथ रह रहा हो, कत्ल किया तो वह जन्नत की बू भी नहीं पा सकता जबकि जन्नत की खुश्बू चालीस साल की दूरी से सूंघी जा सकती है। (बुखारी)

नोटः- इस्लामी हुकूमत हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी समुदाय से संबन्ध रखता हो उसके जान माल सम्मान और अन्य चीज़ों की रक्षा की गारन्टी लेती है। अगर किसी मुस्लिम ने किसी निर्दोष को कत्ल कर दिया चाहे मरने वाला किसी भी समुदाय से संबन्ध रखता हो तो वह इस्लामी कानून की पकड़ से बच नहीं सकता है।

बाज रिवायात में कत्ले मुस्लिम की सज़ा की जो बात कही गयी है वह उस जगह के लिये है जहां केवल मुसलमान बसते थे वरना कत्ल की सज़ा आम है। कुरआन करीम में अल्लाह तआला फरमाता है "इसी वजह से बनी इस्राईल पर हमने यह फरमान लिख दिया था कि जिसने किसी इन्सान को खून के बदले या जमीन में फसाद फैलाने के सिवा किसी और वजह से कत्ल किया उसने गोया तमाम इन्सानों को कत्ल किया और जिसने किसी की जान बचाई उसने गोया तमाम इन्सानों को जिन्दगी बख्श दी। (सूरे माइदा-३२)

सम्पादक

प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्यारी बातें

❑ हज़रत अबू अय्यूब अंसारी बयान करते हैं कि एक व्यक्ति ने आकर मुहम्मद स०अ०व० से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल मुझे कोई ऐसा काम बता दिजिये, जिसको करने से मैं जन्नत में चला जाऊं। मुहम्मद स०अ०व०ने फरमायाः अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को साझीदार न ठहराओ, नमाज़ काइम करो, जकात दो, और रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो। (बुखारी-मस्लिम)

❑ तुम में से जो शख्स कोई बुराई देखे तो उसको अपने हाथ से खत्म करे अगर इसकी ताकत न हो तो जुबान से दूर करने का प्रयास करे, और अगर इसकी भी ताकत न हो तो दिल में इसको बुरा जाने और यह ईमान की सबसे कमज़ोर अलामत है। (मुस्लिम)

❑ मजलूम की बददुआ से बचो इसलिये कि इसके और अल्लाह के बीच कोई पर्दा नहीं। (बुखारी)

❑ अगर किसी ने अपने भाई को अपमानित (रूस्वा) किया है, उसके माल व दौलत या किसी और चीज़ से कुछ लिया है या किसी के साथ कोई जुल्म किया है तो दुनिया ही में उसको मआफ करा ले और उसकी भरपाई कर दे वर्ना क्यामत के दिन जब दीनार व दिहर्म न होंगे ताकि किसी को इनके माध्यम से खुश किया जा सके। जालिम के अच्छे कर्मों को उसके जुल्म के हिसाब से मजलूम के हिस्से में डाल दिये जायेंगे। जब उसका नाम-ए-आमाल नेकियों से खाली हो जायेगा और मजलूम का हक़ बाकी रहेगा तो मजलूम के गुनाह उसके सर पर डाल दिये जायेंगा। (बुखारी)

❑ जुल्म से बचो इसलिये कि जुल्म क्यामत के दिन अंधेरा बन कर आयेगा। (मुस्लिम)

❑ अपने भाई की मदद करो, चाहे वह जालिम हो या मजलूम। आप स०अ०व० से पूछा गया, जालिम की मदद कैसे की जाये। फरमाया कि उसको जुल्म करने से रोकना ही उसकी मदद है। (बुखारी-मुस्लिम)

❑ ऐ अबू ज़र! जब तुम्हारे घर सालन बनाया जाये तो उसमें पानी बढ़ा लिया करो और अपने पड़ोसी का ख्याल रखो। (मुस्लिम ४७५८)

❑ जो व्यक्ति अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो वह अपने पड़ोसी को दुख न दे। (बुखारी ०५६७१)

❑ वह व्यक्ति जन्नत में नहीं जा सकता जिस की शरारतों से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो। (मुस्लिम-६६)

❑ एक बार मुहम्मद स०अ०व० ने तीन बार यह वाक्या सुनाया अल्लाह की कसम वह व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता जिसके दुख से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो। (बुखारी-५५५७)

❑ अल्लाह के नजदीक साथियों में सबसे बेहतर साथी वह है जो अपने साथी के हक़ में बेहतर

हो और सबसे अच्छा पड़ोसी वह है जो अपने पड़ोसी के हक़ में बेहतर हो। (तिर्मिज़ी-१८६८)

❑ जिसे यह पसन्द हो कि अल्लाह और उसके रसूल उससे मुहब्बत करें तो उसे चाहिये कि वह हमेशा सच बोले और जब किसी मामले पर उस पर भरोसा किया जाये तो वह अपने इमानतदार होने का सुबूत दे और अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करे (बैहकी १५०२)

❑ हज़रत आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमायाः कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम जब भी मेरे पास आते तो मुझे पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करने पर इतना ज़ोर देते थे कि मुझे ऐसा लगने लगता था कि वह वरासत में पड़ोसी को हिस्सेदार बना देंगे। (बुखारी-५५५५)

❑ तुममें सब से बेहतर वह है जिसके जरिये से दूसरे इन्सानों को सबसे ज़्यादा भाइदा पहुंचे।

❑ भ्रम से बचो, क्योंकि वह बदतरीन झूठ है, दूसरों की टोह में न लगे रहो, दलाली न करो, साजिश न करो, एक दूसरे के खिलाफ डाह न रखो और अल्लाह के बन्दे बनकर भाई भाई की हैसियत से रहो। (मुस्नद अहमद २८७/२)

❑ रिश्ता नाता अर्श से लटका हुआ है रिश्ता नाता कहता है कि जो मुझे जोड़े गा अल्लाह तआला उसे अपनी रहमत से जोड़ेगा और जो मुझे काटेगा अल्लाह तआला उसे अपनी रहमत से काट देगा। (बुखारी१४७/१)

❑ रिश्ता-नाता तोड़ने वाला जन्नत में नहीं जायेगा। (बुखारी)

❑ अल्लाह तआला ने रिश्तेदारी को खिताब करते हुये फरमाया क्या तू उससे खुश नहीं है कि जिसने तुझे मिलाया मैं उसे जन्नत से मिलाऊं और जिसने तुझे काटा मैं उसे (जन्नत से) काट दूं। (बुखारी)

❑ जिस व्यक्ति का अल्लाह पर ईमान हो तो उसे अपने रिश्तेदारों के साथ रिश्ता नाता जोड़े रखना चाहिये। (बुखारी)

❑ मुहममद स०अ०व०ने फरमाया उस शख्स की नाक खाक आलूद (धूल धूसरित) हो। उस शख्स की नाम खाक आलूद हो उस शख्स की नाक (धूल धूसरित) हो रसूल स०अ०व०से सहाबए किराम ने सवाल किया ऐ अल्लाह के रसूल किसकी नाक खाक आलूद हो? तो आप स०अ०व० ने जवाब दिया उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिसने अपने माता पिता को बुढ़ापे की अवस्था में पाया हो फिर उनकी खिदमत करके जन्नत में नहीं गया। (बुखारी)

अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर माओं की अवज्ञा (नाफरमानी) को हराम करार दिया है। (बुखारी) हज़रत मआज़ बिन जबल रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मुझ से रसूल स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स का आखिरी कलाम ''लाइलाहा इल्लल्लाह'' हो वह जन्नत में जायेगा। (अबू दाऊद ३११६)

❑ अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने रसूल स०अ०व० को फरमाते हुए सुना कि जिस किसी मुसलमान के मरने पर चालीस ऐसे आदमी जनाज़े की नमाज़ पढ़ा दें जो अल्लाह के साथ शिर्क न करते हों तो अल्लाह तआला उनकी सिफारिश उसके हक़ में कुबूल करता है। (मुस्लिम-६४८)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम

15 वाँ आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स

पिछले वर्षों की तरह मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के द्वारा प्रचारकों, अध्यापकों और अइम्मा का आल इंडिया रेफ्रेशर कोर्स 4 मई से 10 मई 2025 तक आयोजित होगा।

उम्मीद है कि यह रेफ्रेशर कोर्स भी पिछले वर्षों की तरह लाभप्रद होगा। जमाअत के सुप्रसिद्ध इस्लामी स्कालर्स, शोधकर्ता, कानूनी माहिरीन अपने इलमी, और दावती अनुभव से लाभान्वित करेंगे। राज्यों के अमीरों और सचिवगण से अपील है कि वह अपने प्रतिनिधियों के नाम जल्द से जल्द भेज दें। हर राज्य से दो प्रतिनिधियों के नाम भेजें।

रेफ्रेशर कोर्स का उदघाटन सत्र 4 मई 2025 इतवार को सुबह 8 बजे आयोजित होगा जिसमें तमाम भाग लेने वालों की शिर्कत ज़रूरी है।

शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

सुखमय व्यवहारिक जीवन के साधन

डा० मुकतदा हसन अज़हरी रह०

सूरे रूम की आयत न० २१ में वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने के आधार का वर्णन है अनुवाद ''और उसके लक्षणों में से यह भी है कि उसने तुम्हारी कोटि से तुम्हारे लिये पत्नियों को जन्म दिया कि तुम उनसे प्रेम प्राप्त करो तथा उसने (ईश्वर ने) तुम में प्रेम तथा दया उत्पन्न किया है, निसन्देह इस घटना में विचारकों के लिये अनेकानेक लक्षण हैं''।

उक्त आयत में इस बात की ओर संकेत है कि पति-पत्नी में से प्रत्येक एक दूसरे से आनन्दित होंगे तथा उसे सुख, प्रसन्नता, शान्ति एवं कुशलता प्राप्त होगी। संयम एवं पवित्रता का जीवन सरल होगा एवं हृदय तथा आत्मा को शान्ति प्राप्त होगी।

इस वर्णन से उन अधिकारों तथा कर्तव्यों की सीमा भी निध ारित हो जाती है जो वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी से सम्बद्ध होते हैं। आयत में जिस प्रकार आदर्श वैवाहिक जीवन के आधारों का वर्णन है उसी प्रकार यह भी स्पष्ट किया गया है कि मनुष्यों में पुरूष का स्त्री से संबन्ध अन्य प्राणियों के संबन्ध से अति श्रेष्ठ है। यहां जीवन का एक उददेश्य एवं उसमें एक पवित्रता तथा प्रेम व स्नेह है जिस का उददेश्य यह है कि मनुष्य सरलता से उस उच्च स्थान तक पहुंच सके जिसके लिये उसको पैदा किया गया है। भोजन, वस्त्र तथा मकान की आवश्यकता स्थिति के अनुसार घटती बढ़ती रहती है तथा कुछ स्थिति में समाप्त भी हो जाती है, परन्तु पति और पत्नी के मध्य प्रेम तथा दया का जो संबन्ध इस्लाम ने स्थापित किया है उसमें भौतिक साधनों से संतुष्टि के पश्चात और बढ़ोतरी होती है तथा इसी से वैवारिक जीवन में सम्पन्नता स्थिर रहती है।

प्रेम, स्नेह के जिस संबन्ध को कुरआन ने अल्लाह तआला की निशानी बताया है उसकी सुरक्षा के लिये नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बात की ओर संकेत किया है कि पति पत्नी में से प्रत्येक अपने रचनात्मक विशेषताओं को पूरी तरह से सुरक्षित रखे जिससे प्यार व मुहब्बत के संबन्धों में किसी प्रकार दुर्बलता उत्पन्न न हो। इसके लिये आवश्यक है कि पत्नी अपनी स्त्रीत्व की पूरी सुरक्षा करे और किसी भी ऐसे व्यवहार एवं चरित्र को ग्रहण न करे जो पुरूषों के लिये विशेष हो तथा उसके स्त्रीत्व को खतरा हो। उसका स्त्रीत्व जितना ही सुरक्षित रहेगा पति की दृष्टि में वह उतनी ही प्रिय होगी। इसी प्रकार पुरूषों को भी पुरूषत्व की सुरक्षा की प्रेरणा दी गयी है जिससे कि उनके प्रति स्त्रियों का लगावा बना रहे तथा पारिवारिक व्यवस्था स्थिर रहे।

अम्न व शान्ति का एक पहलू यह भी है कि जिस प्रकार पति-पत्नी शारीरिक आवश्यकताओं एवं यौनिक भावनाओं की पूर्ति के संबन्ध में एक दूसरे का ध्यान रखते हैं उसी प्रकार विचार एवं रूझहान में भी उनमें समानता आवश्यक है अर्थात दोनों आस्था एवं व्यवहार में उन शिक्षाओं का पालन करते हों जिन को इस्लाम

धर्म ने आवश्यक बताया है। अगर इस्लाम की शिक्षाओं पर दम्पत्ति में से किसी एक का व्यवहार न हो गा और जीवन में व्यवहारिक असमानता होगी तो अनिवार्य रूप से दाम्पत्ति जीवन प्रभावित होगा और आपस में बिगाड़ पैदा होगा।

आयत में प्रेम व स्नेह का जो वर्णन है उसका प्रभाव संपूर्ण मानव जीवन में व्याप्त है। दाम्पत्ति जीवन के अतिरिक्त सन्तान की शिक्षा दीक्षा और परिवार के भरण पोषण एवं सुरक्षा के लिये भी इस विशेषता का प्रभाव अवश्य है। यही भावना है जिससे मनुष्य अपने परिवार की देख रेख करता है और इसी से उसके अन्दर निकट संबन्धियों एवं जन साधारण के साथ शिष्टाचार की प्रक्रिया उत्पन्न होती है। प्रकृति ने मनुष्य के अन्दर यह भावना पैदा करके सामाजिक जीवन में संतुलन स्थापित किया है और सभी प्रकार के बिगाड़ से उसकी सुरक्षा की है। इस्लाम के विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि विवाह के महत्वपूर्ण संबन्ध से ध र्म के निम्नलिखित उददेश्य हैं।

१. दम्पत्ति का सम्मान एवं पवित्रता

२. वंश की सुरक्षा

३. सामाजिक संबन्ध

४. मानव संबन्धों की पुष्टि एवं दृढ़ता

५. मनुष्य की योग्यताओं को सामाजिक जीवन की उन्नति एवं रचना के लिये उचित रूप से प्रयोग करना। (**"इस्लाम और औरत"** पृष्ठ १५६-१५८ से साभार)

❑❑❑

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

इस्लाम पूरी दुनिया के लिये रहमत है

लेखक: डा० मुहम्मद लईकुल्लाह ख़ान – मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी

प्रतिष्ठित सऊदी उलमा बोर्ड ने कहा है कि :

दाइश सहित तमाम आतंकी संगठन के खात्मे के लिए सारे मुसलमानों पर सहयोग करना फर्ज़ है। आतंकवादी संस्थाएं दाइश, अलकायदा और अल हौसी देशों व कौमों को भारी क्षति पहुंचा रही हैं आतंकवाद भयानक अपराध है यह सरासर जुल्म व बर्बरता है इस्लामी शरीअत और मानव प्रकृति के खिलाफ है किसी भी तरह का आतंकवाद किसी भी नाम से जायज़ नहीं। आतंकवाद करने वाले कठोर सज़ाओं के हकदार हैं। कुरआन व सुन्नत और फिकही उसूलों के अनुसार राज्य की सत्ता को बनाए रखने और समय के शासक के खिलाफ बगावत से मना करने वाले निर्देश आतंकवाद से रोकते हैं।

ओलमा बोर्ड़ का ८० वाँ सेशन रियाज़ में आयोजित किया गया १६ ज़ीकाअदा १४३५ हि० को अधिवेशन आरंभ हुआ था अधिवेशन के समापन पर ऐलान किया गया कि:

आतंकवाद अपराध है यह जमीन पर उत्पात मचाना है सऊदी अरब के प्रतिष्ठित ओलमा ने १६ जीकादा १४३५ हि० को आतंकवाद की समस्या पर इस्लामी राए तय करने के लिए इस सभा में विचार विमर्श किया और इस संबंध में बोर्ड के पूर्व बयानों और प्रस्तावों का भी अवलोकन किया गया। बोर्ड अतीत में भी आतंकवाद के खतरे से खबरदार कर चुका था। आतंकवाद के संसाधनों को अपराध माना जा चुका था आतंक वादियों की आर्थिक सहायता को अपराध की श्रेणी में माना जा चुका था इस संबंध में प्रस्ताव न० २३६ दिनांक २७ रबी उस्सानी १४३१ हि० का हवाला दोहराया गया जिसमें आतंकवाद की परिभाषा यह की गयी थी:

‘‘आतंकवाद अपराध है इसका उद्देश्य आनारकी फैलाना है आतंकवादी अम्न व शानित को भंग करते हैं, सरकारी व निजी सम्पत्ति को बर्बाद करते हैं इन्सानी जानों पर हमले करते हैं, मकानों, स्कूलों, अस्पतालों, कारखानों और पुलों को उड़ाते हैं, विमानों में धमाके करते हैं या उन्हें अपहरण कर लेते हैं, राज्य की आय के साधनों को नुकसान पहुंचाते हैं जैसे तेल और गैस की पाइप लाइनों को उड़ा देते हैं ये लोग इसी तरह की तखरीबकारी और इस्लामी कानून के एतबार से हराम काम अंजाम देते हैं’’।

इस पृष्ठ भूमि में आतंकवाद इस्लाम धर्म के मौलिक उद्देश्यों के पूरी तरह खिलाफ है। इस्लाम सारी दुनिया के लिए रहमत बन कर आया है इसमें इन्सानों की तत्काल और दीर्घ कालिक भलाई रखी गयी है इस्लाम दुनिया की प्रगति, निर्माण, शान्ति पूर्ण सह आस्तित्व की व्यवस्था की हिफाज़त और दुनिया में आबाद इन्सानों की बेहतरी का सिलसिला बरकरार रखने के लिए आया है।

ओलमा ने अपने बयानों में यह स्पष्ट किया कि इस्लाम की उदारता और सहिष्णुता आतंकवाद

से मेल नहीं खाती। उदारता इस्लाम की प्रमुख विशेषता है और इस्लाम धर्म के उच्च्च उद्देश्यों में से एक है यह बात अल्लाह तआला इस प्रकार बयान करता है ''और अल्लाह ने दीन के मामले में तुम्हें हरज में नहीं डाला।'' (सूरह हज-७८)

नबी करीम सल्ल० ने उदारता को इस्लाम की प्रमुख विशेषता में शामिल किया है अल्लाह के सन्देष्टा मुहम्मद सल्ल० फरमाते हैं:

''अल्लाह को उदारता और सीधे रास्ते वाला दीन सबसे ज्यादा प्रिय है।''

इस्लाम के इन उद्देश्यों की रोशनी में दीने हक (सत्य धर्म) की महानता और उसका कमाल उजागर होता है अतिवाद और आतंकवाद का जिससे दुनिया में फसाद फैलता है और खेती बाड़ी और इन्सानी नसलों का विनाश होता है का इस्लाम से कोई रिश्ता नाता नहीं।

सऊदी ओलमा के बोर्ड ने अरबों, मुसलमानों और विश्व समुदाय के नाम शाह अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ के इस पैगाम का भी अवलोकन किया जिसमें उन्होंने आतंकवाद के खतरों से सारे विश्व को सचेत किया था और स्पष्ट किया था कि इस्लाम की छवि खराब करने, उसकी इन्सानियत दोस्ती और साफ सुथरी इमेज को दूषित करने के लिए आतंकवाद को इस्लाम से जोड़ा जा रहा है।

ओलमा ने स्पष्ट किया कि आतंकवाद से मुस्लिम समुदाय के हितों को ज़बरदस्त खतरों का सामना है जो लोग आतंकवाद को जिहाद का नाम दे रहे हैं वे नादान और गुमराह हैं आतंकवाद और जिहाद में बड़ा फर्क है इस्लाम इस प्रकार की पथभ्रष्ट सोच से अलग है आतंकवाद से विभिन्न देशों की जानी व माली क्षति हो चुकी है, मकान, गाड़ियां, निजी सम्पत्ति तबाह करने वाले आतंक वादी हैं आतंकवाद पूरी तरह फसाद व अपराध है यह इस्लामी शरीअत और मानव प्रकृति से मेल नहीं खाती, अल्लाह ने कुरआन करीम में आतंकवाद के संदर्भ में आने वाली गतिविधियों का उल्लेख कुरआनी आयतों में किया है कुछ आयतें यह हैं।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''कुछ लोगों के सांसारिक स्वार्थ की बातें तुम्हें खुश कर देती हैं और वह अपने दिल की बातों पर अल्लाह को गवाह बनाता है जबकि हकीकत यह है कि वह जबरदस्त झगड़ालू है जब वह लौट कर जाता है तो जमीन में फसाद फैलाने और खेती बाड़ी और नस्ल की बर्बादी के चक्कर में पड़ा रहता है और अल्लाह फसाद को पसन्द नहीं करता और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डरो तो घमंड और पक्षपात उसे गुनाह पर तैयार कर देता है उसके लिए बस जहन्नम ही है और वह निश्चय ही बहुत ही बुरा ठिकाना है।'' (सूरह बकरा, २०४-२०६)

सऊदी ओलमा के बोर्ड ने कुछ गुटों और जमाआतों के अपराधिक काम सबके सब हराम और आतंकवाद हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी गतिविधियों की हुर्मत (अवैधता) स्पष्ट है। अल्लाह ने कुरआन पाक और नबी सल्ल० ने हदीसों में निर्दोष इन्सान की जान लेने, दौलत को तबाह व बर्बाद करने, अम्न व शान्ति को भंग करने और मकानों व रोजगार के स्थानों पर सुख शान्ति से काम करने वाले लोगों की जिन्दगी और जन सामान्य

के हितों को पामाल करने को हराम करार दिया है ऐसे कामों से ज़्यादा घिनौना काम और ऐसे अपराध से ज्यादा बड़ा अपराध और क्या होगा कि लोग अल्लाह की निर्धारित की गयी सीमाओं को पामाल करें अल्लाह के बन्दों पर जुल्म ढाएँ आसमानी कानूनों पर अमल करने वालों को भयभीत करें। ऐसे लोगों के लिए अल्लाह का अज़ाब मुकर्रर है।

हमारी दुआ है कि अल्लाह तआला अशान्ति फैलाने वालों के षड़यंत्र को उजागर कर दे और उनको लोगों के सामने अपमानित करदे।

ओलमा बोर्ड ने उपर्युक्त जानकारी के आधार पर निम्न फैसले किए

१. उल्लिखित आतंकवाद एक घिनौना अपराध, जुल्म व आक्रामकता है इस्लामी शरीअत इससे मना करती है इस्लामी शरीअत इसे नापसन्द करती है किसी भी प्रकार के आतंकवाद की इजाज़त न शरीअत देती है और न ही मानव प्रकृति। आतंकवाद करने वाला कठोर दंड का हक़दार है सज़ाओं का फैसला इस्लामी शरीअत का है दीन इस्लाम शासन व्यवस्था को कायम रखने का ध्वजावाहक है इस्लाम समय के शासक से बगावत करने से रोकता है। नबी करीम सल्ल० ने फरमाया है।

जो व्यक्ति समय के शासक से बगावत करेगा और कौम से अलाहदगी को अपनाएगा और इसी हाल पर मर जाएगा तो उसकी मौत अज्ञानता की मौत होगी और जो व्यक्ति आंखें बन्द करके किसी गिरोह के परचम तले कत्ल व खून खराबा करेगा, पक्षपात के आधार पर गुस्सा करेगा या अपने गिरोह के मसलक पर अमल करने की दावत देगा या पक्षपात के आधार पर व्यक्ति या गिरोह की मदद करेगा और कत्ल कर दिया जाएगा तो उसका कत्ल अज्ञानता वाला कत्ल होगा। और जो लोग मेरी उम्मत के खिलाफ बग़ावत करेंगे, उम्मत के अच्छे व बुरे लोगों को प्रताड़ित करेंगे मोमिन बन्दों को नज़र अन्दाज़ नहीं करेंगे और अपने वायदे व सन्धियां पूरी नहीं करेंगे उनका न मुझसे कोई संबंध होगा और न मेरा उनसे कोई संबंध होगा"। (सहीह मुस्लिम)

अतः मुसिलम नव जवानों का फर्ज़ है कि वे मामलों के बारे में सूझ बूझ आदि से काम लें, असत्य नारों और मन गढ़त बातों के चक्कर में न पड़ें। ऐसे नारों से दूर रहें जो उम्मत को बिखेरने और उम्मतियों में फसाद फैलाने के लिए लगाए जा रहे हैं और वास्तव में उनका दीन से कोई भी वास्ता नहीं है ये नारे स्वार्थ वाले और खुद पसन्दों के गढ़े हुए हैं इस्लामी कानून ने इस प्रकार की गतिविधियों को अपनाने वालों के लिए सजाएँ निश्चित की हैं इन्हें कड़ी व कठोर सज़ाएं देना ज़रूरी है। उन्हें इस प्रकार की गतिविधियों से रोकना आवश्यक है इस प्रकार के तत्वों के भविष्य का फैसला करना अदालत का काम है।

२. इस पृष्ठ भूमि में प्रतिष्ठित ओलमा बोर्ड का यह भी फैसला है कि शासन आतंकी संगठनों और ग्रुपों से जुड़े लोगों के खिलाफ जो कदम उठा रही है वे सही हैं जो व्यक्ति आतंकवाद और अपराधिक गतिविधियों वाले संगठनों से संबंध रखेगा या उनके परचम तले खड़ा होगा उसकी हकीकत से जन सामान्य को सूचित करना और यह

बताना कि फलां दाइश, अल कायदा, से जुड़ा है या फलां देश की विदेश नीति के विरूद्ध काम कर रहा है शरअी तौर पर लाजिम है ताकि शासन उनके खिलाफ उचित कार्रवाई कर सके। शासन की ओर से इस प्रकार के कदम उठाना सही होंगे। शासन इस प्रकार के कार्य देश व कौम को ऐसे तत्व के शर से बचाने, फितने को रोकने और सीधे सादे नागरिकों की सुरक्षा के लिए करती है, तमाम लोगों का फर्ज़ है कि वे इस प्रकार के संगीन समस्याओं के खात्मे के लिए सरकार से सहयोग करें। यह सहयोग भलाई और तकवा के आधार पर होगा। अल्लाह ने हमें सूरह मायदा की आयत २ में इसका हुक्म दिया।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''ऐ ईमान वालो! अल्लाह के कानून व आदेशों का अपमान न करो, न सम्मान वाले महीनों की हुरमत पामाल करो, न हरम में कुरबान होने वाले और पट्टे पहनाए गए जानवरों का अपमान करो जो काबा के लिए ले जाये जा रहे हों और न उन लोगों का अपमान करो जो अल्लाह के इरादे से अपने घर से अपने रब के फज्ल और उसकी रज़ा पाने की नीयत से जा रहे हों हां जब तुम अहराम उतार दो तो शिकार खेल सकते हो। जिन लोगों ने तुमहें मस्जिदे हराम से रोका था उनकी दुश्मनी तुम्हें इसके लिए तैयार न करे कि तुम हद से गुज़र जाओ नेकी और तक़वा में एक दूसरे की मदद करते रहो और गुनााह और जुल्म व ज्यादती में मदद न करो। और अल्लाह तआला से डरते रहो बेशक अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है''। (सूरह माइदा -२)

सऊदी ओलमा के बोर्ड ने सचेत किया कि जो लोग आतंकवादियों को सुरक्षा उपलब्ध करेंगे वे कबीरा गुनाह (महा पाप) जैसे अपराध करेंगे। ये नबी सल्ल० की उस लानत के हक़दार होंगे जिसे अल्लाह के सन्देष्टा ने अपने इस कथन में स्पष्ट किया है। ''अल्लाह उस व्यक्ति पर लानत भेजेगा जो दीन में नया पन पैदा करने वाले को पनाह देगा''। (बुखारी व मुस्लिम)

३. ओलमा ने शोध कर्ताओं से अपील की कि वे जन सामान्य को इस बारे में इस्लामी राय से अवगत करें और इस सिलसिले में अपना फर्ज़ अदा करें।

४. ओलमा ने आतंकी गतिविधियों को जायज़ करार देने वाले फतवों और विचारों व रायों को बहुत ही बुरा अमल करार देते हुए सचेत किया कि यह शैतानी अमल हैं अल्लाह ने सूरह बकरा की आयत १६८,१६६ में इस काम से यह कह कर मना किया है :

''लोगो जमीन पर जितनी भी हलाल और पाकीज़ा चीज़ें हैं उन्हें खाओ पियो और शैतानी रास्ते पर न चलो, वह तुम्हरा खुला हुआ दुश्मन है वह तुम्हें केवल बुराई और अश्लीलता का और अल्लाह पर उन बातों के कहने का हुक्म देता है जिनका तुम्हें पता नहीं''।

अल्लाह तआला सूरह नहल की आयत ११६-११७ में फरमाता है: ''किसी चीज़ को अपनी ज़बान से झूठ मूठ न कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम है कि अल्लाह पर झूठ बोहतान बांध लो। समझ लो कि अल्लाह पर बोहतान बाज़ी करने वाले कामयाबी से महरूम ही रहते हैं उनको बहुत मामूली

शेष पृष्ठ ५ पर

चार चीज़ों पर अमल करना ज़रूरी है

सालेह सअ़द अल सहीमी

चार चीज़ें ऐसी हैं जिनका जानना और उन पर अमल करना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है। इल्म, अमल, दावत और सब्र।

इन चार बातों का वर्णन सूरे अस्र में भी है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

''ज़माने की कसम, इन्सान यकीनन घाटे में है, सिवा उन लोगों के जो ईमान लाये और अच्छे कर्म किये और एक दूसरे को हक़ की वसिय्यत की और एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत की। (सूरे अस्र)

अल्लाह तआला ने ज़माने की क़सम खायी है, अल्लाह को हक है कि जिस मखलूक की चाहे कसम खाये और मखलूक के लिये ज़रूरी है कि वह केवल अल्लाह या उसकी सिफत की कसम खाये मखलूक की नहीं। इन चार बातों को अपनाने वालों के अलावा बाकी सभी इन्सान घाटे में हैं। घाटे और तबाही से केवल चार प्रकार की खूबियाँ रखने वाले अलग हैं। पहली खूबी ईमान है, ईमान का इल्म पर आधारित होना जरूरी है। इल्म का मकसद अल्लाह की जात और उसके नामों और खूबियों की पहचान उसके रसूल की पहचान और दीने इस्लाम की दलीलों के साथ पहचान और इस इल्म के अनुसार कहनी, करनी और आस्था के द्वारा अमल करना।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं और अपने लिये और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के गुनाहों के लिये मगफिरत माँगो और अल्लाह जानता है तुम्हारे अंजाम को और तुम्हारे ठिकाने को। (सूरे मुहम्मद)

बगैर अमल के इल्म ऐसे ही है जैसे बगैर रूह के जिस्म। ऐसे इल्म से कोई फायदा नहीं है बल्कि वह बेअमल आलिम के लिये बोझ और उसके खिलाफ दलील है। अल्लाह तआला ने फरमाया ''ऐ ईमान वालो तुम वह बातें क्यों करते हो जो करते नहीं। अल्लाह के नज़दीक बड़ी नाराज़गी की बात है कि तुम वह बातें कहो जो तुम खुद नहीं करते''। (सूरे सफ्फ-३२)

कर्म जब तक अल्लाह के लिये खालिस और इस्लामी कानून के अनुसार न हो दुरूस्त नहीं हो सकता। हक़ की वसिय्यत के द्वारा अल्लाह ने यह सन्देश दिया है कि इल्म और अमल की तरफ जब बुलाया जाये तो हिकमत और अच्छे अनदाज़ में बुलाया जाये। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''आप कह दीजिये कि यह मेरी राह है मैं और मेरे पैरोकार अल्लाह की तरफ बसीरत की बुनियाद पर दावत देते हैं और अल्लाह की पाकी हो, मैं मुश्रिकों में से नहीं हूं''। (सूरे यूसुफ)

चौथी बात का वर्णन ''वतवा सौबिस सब्र'' में है इस लिये कि जो शख्स अल्लाह की तरफ बुलाता है उसके लिये सब्र करना और दावत की राह में कठिनाइयों का सहन करना ज़रूरी है। यही नबियों रसूलों की पैरवी है उन्होंने सब्र किया और सब्र की प्रेरणा दी और कठिनाइयों के बावजूद अल्लाह के पैगाम को बन्दों तक पहुंचाया।

इमाम शाफई रह० सूरे अस्र के बारे में फरमाते हैं कि अगर अल्लाह ने अपनी मखलूक (सृष्टि) के लिये केवल इसी सूरे को नाज़िल कर देते तो काफी था। (तफसीर इब्ने कसीर)

बच्चों का प्रशिक्षण

माँ बाप के वह ५ जुमले जो बच्चे को टूटने पर मजबूर कर देते हैंः क्या कभी आप ने सोचा कि आप का एक जुमला आप के बच्चे की खुद ऐतमादी (आत्मविश्वास) को तबाह कर सकता है?

बच्चे हस्सास होते हैं, वह माँ बाप के अल्फ़ाज़ को दिल पर लेते हैं और अकसर उन्हीं अल्फ़ाज़ की वजह से अपनी सलाहियतों पर शक करने लगते हैं।

यह हैं वह ज़हरीले जुमले जो वालदैन अकसर अनजाने में कह देते हैं मगर उनका असर बच्चे की पूरी ज़िन्दगी पर पड़ता है।

''तुम से तो कुछ नहीं होता।''

यह जुमला बच्चे के अन्दर नाकामी का खौफ़ बैठा देता है। वह कोशिश करने से पहले ही हार मानने लगता है, क्योंकि उसके ज़ेहन में यह बिठा दिया जाता है कि वह कुछ कर ही नहीं सकता। जबकि यह कहना बेहतर है। ''तुम कोशिश करो, मैं तुम्हारे साथ हूं।''

''दूसरों के बच्चे देखो, कितने अच्छे हैं।''

यह जुमला बच्चे में एहसास कमतरी पैदा कर देता है जब वालदैन बच्चे को दूसरों से मुवाज़ना (तुलना) करते हैं, तो वह खुद को कमतर समझने लगता है और उसके दिल में माँ बाप के लिए बदगुमानी पैदा हो जाती है।

जबकि यह कहना बेहतर है।

''तुम में बहुत सलाहियत है, बस मेहनत करो!''

''बस बकवास बन्द करो!''

जब बच्चा अपनी बात कहना चाहे और माँ बाप उसे खामोश करा दें, तो वह हतोत्साहन का शिकार हो जाता है वह समझता है कि उसकी बातों की कोई अहमियत नहीं और आहिस्ता आहिस्ता वह खामोशी और तन्हाई को अपनाने लगता है।

''मैं सुन रहा हूं तुम बताओ।

तुम हमेशा ग़लती करते हो।''

यह जुमला बच्चे को खुद पर शक में मुब्तेला कर देता है, वह हर फैसला करने से डरने लगता है क्योंकि उसे लगता है कि वह हमेशा गलत ही करेगा।

जबकि यह कहना बेहतर है।

ग़लती से सीखा जाता है तुम अगली बार बेहतर करोगे।

तुम हमारे लिए बोझ हो!

यह सब से ज़्यादा तबाहकुन जुमला है! अगर कभी भी माँ बाप गुस्से में यह जुमला कह दें तो बच्चा खुद को न चाहते कमतर महसूस करता है यह अल्फ़ाज़ उसकी शख़्सीयत पर नकारातमक असर डालते हैं और बाज़ औक़ात डिपरेशन और खुद कुशी के ख़्यालात का सबब भी बन सकते हैं। जबकि यह कहना है कि

हम तुम से मुहब्बत करते हैं, तुम हमारे लिये बहुत क़ीमती हो।

अल्लाह के नबी स० बच्चों से हमेशा नर्मी और मुहब्बत से पेश आते थे। हदीस में आता हैः बच्चों के साथ रहमत वाला मामला करो, क्योंकि जो छोटों पर रहम नहीं करता, वह हममें से नहीं। (मुस्लिम)

बच्चों की तरबीयत में नर्म लेहजा और हौसला बढ़ाने वाले अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करना सुन्नत है, और यही कामियाब माँ बाप की पहचान है।

अब आपकी बारी है!

क्या आपने भी कभी जज़्बात में आकर ऐसा कोई जुमला कहा है? आज ही अपनी बातों पर नज़र डालें और अपने बच्चे की शख़्सीयत को बिखरने से बचायें। (साभार)

कोई भी पकड़ से बच नहीं पायेगा

नौशाद अहमद

"याद रखो कि जितनी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं सब अल्लाह ही की मिलकियत है, याद रखो कि अल्लाह तआला का वादा सच्चा है लेकिन बहुत से आदमी ज्ञान ही नहीं रखते, वही जान डालता है वही जान निकालता है और तुम सब उसी के पास लाये जाओगे" (सूरे यूनुसः ५५-५६)

कुरआन की इन आयतों में अल्लाह के असीमित अधिकारों और शक्तियों को बयान किया गया है, कुरआन इन शक्तियों और अधिकारों का उल्लेख करके इन्सान को यह सन्देश दे रहा है कि जो हस्ती इतने अधिकार रखती है, उससे बड़ा से बड़ा अपराधी बच कर नहीं जा सकता, एक न एक दिन वह अल्लाह की पकड़ में आयेगा। दुनिया में छूट मिलने का मतलब यह नहीं हुआ कि अब उसका कुछ नहीं होगा या वह अल्लाह की पकड़ और प्रकोप से बच गया, यह ढील भी एक तरह से परीक्षा है, अगर इस परीक्षा को इन्सान अपने लिये नसीहत समझ ले तो फिर वह अल्लाह की पकड़ से बच सकता है लेकिन बुराई पर काइम रहना और यह समझना कि उसका कुछ नहीं होगा तो यह इन्सान की हठ और गलत फहमी है। सजा का दिन अल्लाह ने तय कर दिया है उस दिन बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा इन्सान अपने कुकर्मों से बच कर निकल नहीं पायेगा इसलिये कि उस दिन न कोई सिफारिश काम आयेगी और न रूपया पैसा काम आयेगा, उस दिन केवल इन्सान का नेक कर्म काम आयेगा, वहां शब्दों का जाल फैला कर कोई भी बच कर नहीं निकल सकता, बातों के बाजीगर हिसाब के दिन अपने कुकर्मों की वजह से पकड़ में आयेगा और उनको अपने किये की सज़ा मिलेगी, वहां किसी तरह की धोंस काम नहीं आयेगी और न दुनिया का कोई षडयंत्र काम आयेगा, उस दिन हर चीज़ दो-दो चार की तरह स्पष्ट और खोल खोल कर बयान कर दी जायेगी। अब नई टेक्नालोजी अपराधियों, हेराफेरी करने वालों, गलत तरीके से दौलत बनाने वालों को अपनी पकड़ में ले लेती है, दुनिया की मशीनों में कुछ न कुछ कमी हो सकती है, लेकिनअल्लाह तआला का हिसाब किताब लेने के अमल में सिकी तरह की कोई कमी नहीं है, उस दिन झूठों और हेरा फेरी करने वालों के अंग भी गवाही देंगे। इस लिये हर इन्सान को हमेशा यह ध्यान रखना चाहिये कि उसका कोई भी कर्म अल्लाह की नज़रों से गुप्त नहीं है, उसके सारे कर्मों का हिसाब किताब मौजूद है और कर्मों के आधार पर इन्सान सज़ा और जज़ा (बदला) पायेगा। न किसी की दयादृष्टि काम आयेगी न किसी की झूठी सरपरस्ती काम आयेगी।

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र कुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उददेश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के परिणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्ध में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता

असगर अली इमाम महदी सलफी

अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान

Posted On 24-25 Every Month
Posted At LPC, Delhi
RMS Delhi-110006
“Registered with the Registrar of Newspapers for India”

APRIL 2025

RNI - 53452/90

P.R.No.DL (DG-11)/8065/2023-25

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

अहले हदीस मंज़िल की तामीर व तकमील के सिलसिले में

सम्माननीय अइम्मा, खुतबा, मस्जिदों के संरक्षकों और जमईआत के पदधारियों से पुरजोर अपील व अनुरोध

अहले हदीस मंज़िल में चौथी मंज़िल की ढलाई का काम हुआ चाहता है और अन्य तीनों मंज़िलों की सफाई की तकमील के लिये आप से अनुरोध है कि आने वाले जुमा में नियमित रूप से अपनी मस्जिदों में इसके सहयोग के लिये पुरज़ोर एलान फरमायें और नीचे दिये गये खाते में रकम भेज कर जन्नत में ऊंचा मक़ाम बनाएं और इस सद-क़-ए जारिया में शरीक हों।

सहयोग के तरीक़े (१) सीमेन्ट सरिया, रोड़ी, बदरपुर, रेत (२) नक़द रक़म (३) कारीगरों और मज़दूरों की मज़दूरी की अदायगी (४) खिड़की, दरवाज़ा, पेन्ट, रंग व रोगन का सामान या क़ीमत देकर सहयोग करें और माल व औलाद और नेक कार्यों में बर्कत पाएँ।

paytm UPI

9899152690@ptaxis

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. **629201058685** (ICIC Bank)

Chandni Chowk, Delhi-110006

(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)

पताः-4116 उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006

Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

Total Pages 28

28